Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 9 | ISSUE : 10 | OCTOBER 2023

महाभारत की महनीयता: एक विहंगम दृष्टि

डॉ. बलवन्त सिंह चौहान [1] | नीलिमा [2]

[1] प्रोफेसर एवं शोध निर्देशक (संस्कृत), डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.)

[2] शोध छात्रा (संस्कृत), डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.)

ABSTRACT:

महाभारत भारत के आर्ष साहित्य का सबसे महान् ग्रन्थ है। विषय और कलेवर दोनों ही दृष्टियों से इसकी महत्ता सर्वमान्य है। समूचे भारतवर्ष की संस्कृति, सभ्यता अथवा आदर्श का प्राचीन चित्र देखना हो तो वह महाभारत में ही उपलब्ध हो सकता है। 18 पर्वो में विभक्त एक लाख श्लोकों वाला यह महाभारत एक अगाध महासागर के समान है। इसके भीतर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों से सम्बन्ध रखने वाले अनन्त उपदेशरत्न भरे पड़े हैं। संसार का सर्वमान्य धर्मग्रन्थ श्रीमद्भगवदीता भी इसी रत्नाकर का एक जाजवल्यमान रत्न है। यदि महाभारत को हम सम्पूर्ण वेद, उपनिषद्, दर्शन, पुराण, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र और मोक्षशास्त्र आदि का एकमात्र प्रतिनिधि ग्रन्थ कहें तो यह कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

KEYWORDS:

धर्म, नीति, शास्त्र, श्रद्धा, पुण्य, मोक्ष, पुरुषार्थ, संस्कृति, धर्म, परमार्थ।

महाभारत का संक्षिप्त परिचय और उसकी महत्ता - महाभारत के सम्बन्ध में एक प्रसिद्ध उक्ति है- **' यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित् ॥ '** अर्थात् - जो भारत में है, वही नाना रूपों में सर्वत्र है; जो इसमें नहीं है, वह कहीं भी नहीं है। इस उक्ति में मिथ्यांश अणुमात्र भी नहीं है; यह अक्षरशः सत्य है। क्योंकि परमार्थ अथवा व्यवहार में जितने सदुपदेश हैं, उनका मूल महाभारत में अवश्य है। इसी से सभी विषयों का ज्ञान इससे मिलता है और इसी से महाभारत को शास्त्रों में पञ्चम वेद कहा है। विशेषता यह है कि अन्य चार वेदों से शूद्रादि का साक्षात् उपकार नहीं होता, किन्तु महाभारत से द्विजेतर भी लाभ उठा सकते हैं; इसीलिए तो भगवान् श्रीकृष्ण द्वैपायन ने अनादिसिद्ध उपदेशनिधि 'भारत' को प्रकाशित किया है।'

महाभारत ग्रन्थ की रचना - महर्षि वेदव्यास ने महाभारत की रचना के संबंध में आदिपर्व में विस्तार से उल्लेख करते हुए कहा है –

पुण्ये हिमवतः पादे मध्ये गिरिगुहालये।
विशोध्य देहं धर्मात्मा दर्भसंस्तरमाश्रितः ॥
शुचिः सनियमो व्यासः शान्तात्मा तपसि स्थितः।
भारतस्येतिहासस्य धर्मेणान्वीक्ष्यं तां गतिम् ॥
प्रविश्य योगं ज्ञानेन सोऽपश्यत् सर्वमन्ततः।[1]

अर्थात् - हिमालय की पवित्र तलहटी में पर्वतीय गुफा के भीतर धर्मात्मा व्यासजी खानादि से शरीर-शुद्धि करके पवित्र हो कुशका आसन बिछाकर बैठे थे। उस समय नियमपालनपूर्वक शान्तचित्त हो वे तपस्या में संलग्न थे। ध्यानयोग में स्थित हो उन्होंने धर्मपूर्वक महाभारत इतिहास के स्वरूप का विचार करके ज्ञानदृष्टि द्वारा आदि से अन्त तक सब कुछ प्रत्यक्ष की भाँति देखा और इस ग्रन्थ का निर्माण किया।

मन्वादि भारतं केचिदास्तीकादि तथा परे।
तथोपरिचराद्यन्ये विप्राः सम्यगधीयते ॥
विविधं संहिताज्ञानं दीपयन्ति मनीषिणः।
व्याख्यातुं कुशलाः केचिद् ग्रन्थान् धारयितुं परे ॥
तपसा ब्रह्मचर्येण व्यस्य वेदं सनातनम्।
इतिहासमिमं चक्रे पुण्यं सत्यवतीसुतः ॥[2]

अर्थात् - कोई-कोई इस ग्रन्थ का आरम्भ 'नारायणं नमस्कृत्य' से मानते हैं और कोई-कोई आस्तीकपर्व से। दूसरे विद्वान् ब्राह्मण उपरिचर वसुकी कथा से इसका विधिपूर्वक पाठ प्रारम्भ करते हैं। विद्वान् पुरुष इस भारत संहिता के ज्ञान को विविध प्रकार से प्रकाशित करते हैं। कोई-कोई ग्रन्थ की व्याख्या करके समझाने में कुशल होते हैं तो दूसरे विद्वान् अपनी तीक्ष्ण मेधाशक्ति के द्वारा इन ग्रन्थों को धारण करते हैं। सत्यवतीनन्दन भगवान् व्यास ने अपनी तपस्या एवं ब्रह्मचर्य की शक्ति से सनातन वेद का विस्तार करके इस लोकपावन पवित्र इतिहास का तिर्माण किया है।

महाभारत का प्रतिपाद्य - महाभारत की रचना का उल्लेख करने के उपरान्त सौति द्वारा इस विशालकलेय महाकाव्य में संगृहीत विविध विषयों, उपविषयों, कथाओं एवं उपाख्यानों के बारे में विस्तार से कहा गया है। वेदव्यास जी द्वारा रचित इस ग्रन्थ में प्रतिपादित विविध विषयों का सङ्केत इस प्रकार प्राप्त होता है।

उवाच स महातेजा ब्रह्माणं परमेष्ठिनम्।
कृतं मयेदं भगवन् काव्यं परमपूजितम् ॥
ब्रह्मन् वेदरहस्यं च यच्चान्यत् स्थापितं मया।
साङ्गोपनिषदां चैव वेदानां विस्तरक्रिया ॥
इतिहासपुराणानामुन्मेषं निर्मितं च यत्।
भूतं भव्यं भविष्यं च त्रिविधं कालसंज्ञितम् ॥[3]

अर्थात् - परमतेजस्वी व्यासजी ने परमेष्ठी ब्रह्माजी से निवेदन किया - 'भगवन्! मैंने यह सम्पूर्ण लोकों से अत्यन्त पूजित एक महाकाव्य की रचना की है।' ब्रह्मन् ! मैंने इस महाकाव्य में सम्पूर्ण वेदों का गुप्ततम रहस्य तथा अन्य सब शास्त्रों का सार-सार सङ्कलित करके स्थापित कर दिया है। केवल वेदों का ही नहीं, उनके अङ्ग एवं उपनिषदों का भी इसमें विस्तार से निरूपण किया है। इस ग्रन्थ में इतिहास और पुराणों का मन्चन करके उनका प्रशस्त रूप प्रकट किया गया है। भूत, वर्तमान और भविष्यकाल की इन तीनों संज्ञाओं का भी वर्णन हुआ है।

इस ग्रन्थ में बुढ़ापा, मृत्यु, भय, रोग और पदार्थों के सत्यत्व और मिथ्यात्व का विशेष रूप से निश्चय किया गया है तथा अधिकारी-भेद से भिन्न-भिन्न प्रकार के धर्मों एवं आश्रमों का भी लक्षण बताया गया है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चारों वर्णों के कर्तव्य का विधान, पुराणों का सम्पूर्ण मूलतत्त्व भी प्रकट हुआ है। तपस्या एवं ब्रह्मचर्य के स्वरूप, अनुष्ठान एवं फलों का विवरण, पृथ्वी, चन्द्रमा, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, तारा, सत्ययुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग इन सबके परिमाण और प्रमाण, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और इनके आध्यात्मिक अभिप्राय और अध्यात्मशास्त्र का इस ग्रन्थ में विस्तार से वर्णन किया गया है। न्याय, शिक्षा, चिकित्सा, दान तथा पाशुपत (अन्तर्यामी की महिमा) का भी इसमें विशद् निरूपण है। साथ ही यह बतलाया गया है कि देवता, मनुष्य आदि भिन्न-भिन्न योनियों में जन्म का कारण क्या है? इसी क्रम में इसमें लोकपावन तीर्थों, देशों, नदियों, पर्वतों, वनों और समुद्र का इसमें वर्णन किया है। साथ

ही, इस महाकाव्य में विभिन्न कौशलों, कलाओं तथा वास्तुशैली एवं भवन निर्माण का उल्लेख भी मिलता है।[4] लोकव्यवहार की सिद्धि के लिये जो कुछ आवश्यक है तथा और भी जितने लोकोपयोगी पदार्थ हो सकते हैं, उन सबका इसमें प्रतिपादन किया गया है।

महर्षि वेदव्यास के इस अनुपम ग्रन्थ को ब्रह्मा जी के आदेश से गणेश से लिखवाने का निर्णय होने के उपरान्त सौति ने इस ग्रन्थ के मुख्य प्रतिपाद्य के सम्बन्ध में इस प्रकार कहा –

विस्तरं कुरुवंशस्य गान्धार्या धर्मशीलताम् ॥

क्षत्तुः प्रज्ञां धृतिं कुन्त्याः सम्यग् द्वैपायनोऽब्रवीत् ।

वासुदेवस्य माहात्म्यं पाण्डवानां च सत्यताम् ॥

दुर्वृत्तं धार्तराष्ट्राणामुक्तवान् भगवानृषिः ।

इदं शतसहस्रं तु लोकानां पुण्यकर्मणाम् ॥

उपाख्यानैः सह ज्ञेयमाद्यं भारतमुत्तमम् ।[5]

इस महाभारत-ग्रन्थ में व्यासजी ने कुरुवंश के विस्तार, गान्धारी की धर्मशीलता, विदुर की उत्तम प्रज्ञा और कुन्ती देवी के धैर्य का भली-भाँति वर्णन किया है। महर्षि भगवान् व्यास ने इसमें वसुदेवनन्दन श्रीकृष्ण के माहात्म्य, पाण्डवों की सत्यपरायणता तथा धृतराष्ट्रपुत्र दुर्योधन आदि के दुर्व्यवहारों का स्पष्ट उल्लेख किया है। इस मनुष्य लोक में एक लाख श्लोकों का आद्यभारत (महाभारत) प्रतिष्ठित है।

देवर्षि नारद ने देवताओं को और असित देवल ने पितरों को इसका श्रवण कराया है। यथा-

गन्धर्वयक्षरक्षांसि श्रावयामास वै शुकः।

अस्मिंस्तु मानुषे लोके वैशम्पायन उक्तवान् ॥

शिष्यो व्यासस्य धर्मात्मा सर्ववेदविदां वरः ।

एकं शतसहस्रं तु मयोक्तं वै निबोधत ॥

दुर्योधनो मन्युमयो महाद्रुमः स्कन्धः कर्णः शकुनिस्तस्य शाखाः।

दुःशासनः पुष्पफले समृद्धे मूलं राजा धृतराष्ट्रोऽमनीषी ॥

युधिष्ठिरो धर्ममयो महादुमः स्कन्धोऽर्जुनो भीमसेनोऽस्य शाखाः।

मादीसुती पुष्पफले समृद्धे मूलं कृष्णो ब्रह्म च ब्राह्मणाच॥[6]

अर्थात् - शुकदेव जी ने गन्धर्व, यक्ष तथा राक्षसों को महाभारत की कथा सुनायी है; परन्तु इस मनुष्यलोक में सम्पूर्ण वेदवेत्ताओं के शिरोमणि व्यास-शिष्य धर्मात्मा वैशम्पायनजी ने इसका प्रवचन किया है। मुनिवरो! वही एक लाख श्लोकों का महाभारत आप लोग मुझसे श्रवण कीजिए। दुर्योधन क्रोधमय विशाल वृक्ष के समान है। कर्ण स्कन्ध, शकुनि शाखा और दुःशासन समृद्ध फल-पुष्प है।

अज्ञानी राजा धृतराष्ट्र ही इसके मूल हैं। युधिष्ठिर धर्ममय विशाल वृक्ष हैं। अर्जुन स्कन्ध, भीमसेन शाखा और माद्रीनन्दन इसके समृद्ध फल-पुष्प हैं। श्रीकृष्ण, वेद और ब्राह्मण ही इस वृक्ष के मूल (जड़) हैं।

महाभारत की महत्ता - आदिपर्व के 62वें अध्याय में भी इस ग्रन्थ की महत्ता का प्रतिपादन किया गया है- असीम प्रभावशाली सत्यवतीनन्दन व्यासजी ने पुण्यात्मा पाण्डवों की यह कथा एक लाख श्लोकों में कही है। जो विद्वान् इस आख्यान को सुनाता है और जो मनुष्य सुनते हैं, वे ब्रह्मलोक में जाकर देवताओं के समान हो जाते हैं। यह ऋषियों द्वारा प्रशंसित पुरातन इतिहास श्रवण करने योग्य सब ग्रन्थों में श्रेष्ठ है। यह वेदों के समान ही पवित्र तथा उत्तम है।[7] साथ ही वह भ्रूण हत्या जैसे पाप को भी नष्ट कर देता है, इसमें संशय नहीं है। इस इतिहास को श्रवण करके अत्यन्त क्रूर मनुष्य भी राहु से छूटे हुए चन्द्रमा की भाँति सब पापों से मुक्त हो जाता है। यह 'जय' नामक इतिहास विजय की इच्छा वाले पुरुष के अवश्य सुनना चाहिए।[8]

धर्मशास्त्रमिदं पुण्यमर्थशास्त्रमिदं परम् ।

मोक्षशास्त्रमिदं प्रोक्तं व्यासेनामिबुद्धिना ॥

सम्प्रत्याचक्षते चेदं तथा श्रोष्यन्ति चापरे ।

पुत्राः शुश्रूषवः सन्ति प्रेष्याश्च प्रियकारिणः ॥

शरीरेण कृतं पापं वाचा च मनसैव च ।

सर्वं संत्यजति क्षिप्रं य इदं शृणुयान्नरः ॥

भरतानां महज्जन्म शृण्वतामनसूयताम् ।

नास्ति व्याधिभयं तेषां परलोकभयं कुतः ॥[9]

अर्थात्-अमित मेधावी व्यासजी ने इसे पुण्यमय धर्मशास्त्र, उत्तम अर्थशास्त्र सर्वोत्तम मोक्षशास्त्र भी कहा है। जो वर्तमानकाल में इसका पाठ करते हैं तथा जो भविष्य में इसे सुनेंगे, उनके पुत्र सेवापरायण और सेवक स्वामी का प्रिय करने वाले होंगे। जो मानव इस महाभारत को सुनता है, वह शरीर, वाणी और मन के द्वारा किये हुए सम्पूर्ण पापों को त्याग देता है। जो दूसरों के दोष न देखने वाले भरतवंशियों के महान् जन्म-वृत्तान्तरूप महाभारत का श्रवण करते हैं, उन्हें इस लोक में भी रोग-व्याधि का भय नहीं होता, फिर परलोक में तो हो ही कैसे सकता है?

वंशमाप्नोति विपलं लोके पूज्यतमा भवेत् ।

योऽधीते भारतं पुण्यं ब्राह्मणो नियतव्रतः ॥

चतुरो वार्षिकान् मासान् सर्वपापैः प्रमुच्यते ।

विज्ञेयः स च वेदानां पारगो भारतं पठन् ॥[10]

अर्थात् –इसके सिवा, उसे विपुल वंश की प्राप्ति होती है और वह लोक में अत्यन्त पूजनीय होता है। जो ब्राह्मण नियमपूर्वक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए वर्षा के चार महीने तक निरन्तर इस पुण्यप्रद महाभारत का पाठ करता है, वह सब पापों से मुक्त हो जाता है। जो महाभारत का पाठ करता है, उसे सम्पूर्ण वेदों का पारंगत विद्वान् जानना चाहिए।

नरेण धर्मकामेन सर्वः श्रोतव्य इत्यपि ।

निखिलेनेतिहासोऽयं ततः सिद्धिमवाप्नुयात् ॥

न तां स्वर्गगतिं प्राप्यं तुष्टिं प्राप्नोति मानवः ।

यां श्रुत्वैव महापुण्यमितिहासमुपाश्नुते ॥

श्रृण्वञ्छ्रादः पुण्यशीलः श्रावयंश्चेदमद्भुतम् ।

नरः फलमवाप्नोतिराजसूयाश्वमेधयोः ॥

यथा समुद्रो भगवान् यथा मेरुर्महागिरीः ।

उभौ ख्यातौ रत्ननिधी तथा भारतमुच्यते ॥

इदं हि वेदैः समितं पवित्रमपि चोत्तमम् ।

श्रव्यं श्रुतिसुखं चैव पावनं शीलवर्धनम् ॥

य इदं भारतं राजन् वाचकाय प्रयच्छति ।

तेन सर्वा मही दत्ता भवेत् सागरमेखला ॥

धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ ।

यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित् ॥[11]

अर्थात् - धर्म की इच्छा रखने वाले मनुष्य के द्वारा यह सारा महाभारत इतिहास पूर्णरूप से श्रवण करने योग्य है। ऐसा करने से मनुष्य सिद्धि को प्राप्त कर लेता है। इस महान् पुण्यदायक इतिहास को सुनने मात्र से मनुष्य को जो संतोष प्राप्त होता है, वह स्वर्गलोक प्राप्त कर लेने से भी नहीं मिलता। जो पुण्यात्मा मनुष्य श्रद्धापूर्वक इस अद्भुत इतिहास को सुनता और सुनाता है, वह राजसूय तथा अश्वमेध यज्ञ का फल पाता है। जैसे ऐश्वर्यपूर्ण समुद्र और महान् पर्वत मेरु दोनों रत्नों की खान कहे गये हैं, वैसे ही महाभारत रत्नस्वरूप कथाओं और उपदेशां का भण्डार कहा जाता है। यह महाभारत वेदों के समान पवित्र और उत्तम है। यह सुनने योग्य तो है ही, सुनते समय कानों को सुख देने वाला भी है। इसके श्रवण से अन्तःकरण पवित्र होता और उत्तम शील स्वभाव वृद्धि होती है। राजन्! जो वाचक को यह महाभारत दान करता है, उसके द्वारा समुद्र से घिरी हुई सम्पूर्ण पृथ्वी का दान सम्पन्न हो जाता है। भरतश्रेष्ठ। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के सम्बन्धों में जो बात इस ग्रन्थ में है, वही अन्यत्र भी है। जो इसमें नहीं है, वह कहीं भी नहीं है।

महाभारत को महनीयता और इसके पारायण के फल के विषय में महर्षि कृष्णद्वैपायन ने ग्रन्थ के अन्तिम स्वर्गारोहणपर्व में भी विषद् विवेचन इस प्रकार किया गया है। इस ग्रन्थ में भरतवंशियों के महान् जन्मकर्म का वर्णन है, इसलिये इसे महाभारत कहते हैं। महान् और भारी होने के कारण भी इसका नाम महाभारत हुआ है। जो महाभारत की इस व्युत्पत्ति को

जानता और समझता है वह समस्त पापों से मुक्त हो जाता है। अठारह पुराणों के निर्माता और वेद विद्या के महासागर महात्मा व्यास मुनि का यह सिंहनाद सुनी । वे कहते हैं 'अठारह पुराण, सम्पूर्ण धर्मशास्त्र और छहों अङ्गों सहित चारों वेद एक ओर तथा केवल महाभारत दूसरी ओर, यह अकेला ही उन सबके बराबर है।' मुनिवर भगवान् श्रीकृष्णद्वैपायन ने तीन वर्षों में इस सम्पूर्ण महाभारत को पूर्ण किया था । जो जय नामक इस महाभारत इतिहास को सदा भक्तिपर्वक सनता रहता है उसके यहाँ श्री कोर्ति और विद्या तीनों साथ-साथ रहती हैं । भरतश्रेष्ठ ! धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के विषय में जो कुछ महाभारत में कहा गया है, वही अन्यत्र है । जो इसमें नहीं है, वह कहीं नहीं है । मोक्ष की इच्छा रखने वाले ब्राह्मण को, राज्य चाहने वाले क्षत्रिय को तथा उत्तम पुत्र की इच्छा रखने वाली गर्भिणी स्त्री को भी इस जय नामक इतिहास का श्रवण करना चाहिये । महाभारत का श्रवण या पाठ करने वाला मनुष्य यदि स्वर्ग की इच्छा करे तो उसे स्वर्ग मिलता है और युद्ध में विजय पाना चाहे तो विजय मिलती है । इसी प्रकार गर्भिणी स्त्री को महाभारत के श्रवण से सुयोग्य पुत्र या परम सौभाग्यशालिनी कन्या की प्राप्ति होती है।[12]

भारताध्ययनात् पुण्यादपि पादमधीयतः ।

श्रद्धया परया भक्त्या श्राव्यते चापि येन तु ॥[13]

अर्थात् - जो अत्यन्त श्रद्धा और भक्ति के साथ महाभारत के एक अंश को भी सुनता और दूसरों को सुनाता है उसे सम्पूर्ण महाभारत के अध्ययन का पुण्य प्राप्त होता है और उसी के प्रभाव से उसे उत्तम सिद्धि मिल जाती है।

महाभारत के श्रवण एवं पठन का फल - महाभारत के आदिपर्व के प्रथम व द्वितीय अध्याय में अनेक श्लोकों के माध्यम से इस महत्तम ग्रन्थ में न केवल इसके पठन की, वल्कि श्रवण की महिमा भी कही गई है। इसी प्रसङ्ग में यहाँ कुछ श्लोक द्रष्टव्य है –

अज्ञानतिमिरान्धस्य लोकस्य तु विचेष्टतः ।

ज्ञानाञ्जनशलाकाभिर्नेत्रोन्मीलनकारकम् ॥

धर्मार्थकाममोक्षार्थैः समासव्यासकीर्तनैः ।

तथा भारतसूर्येण नृणां विनिहतं तमः ॥

पुराणपूर्णचन्द्रेण श्रुतिज्योत्स्नाः प्रकाशिताः ।

नृबुद्धिकैरवाणां च कृतमेतत् प्रकाशनम् ॥

इतिहासप्रदीपेन मोहावरणघातिना ।

लोकगर्भगृहं कृत्स्नं यथावत् सम्प्रकाशितम् ॥[14]

अर्थात् - संसारी जीव अज्ञानान्धकार से अंधे होकर छटपटा रहे हैं। यह ज्ञानांजन की शलाका उनकी आँख खोल देता है। वह शलाका क्या है? धर्म, अर्थ, काम और मोक्षरूप पुरुषार्थों का संक्षेप और विस्तार से वर्णन। यह न केवल अज्ञान की रतौंधी दूर करता, प्रत्युत सूर्य के समान उदित होकर मनुष्यों की आँख के सामने का सम्पूर्ण अन्धकार ही नष्ट कर देता है । यह भारत-पुराण पूर्ण चन्द्रमा के समान है, जिससे श्रुतियों की चाँदनी छिटकती है और मनुष्यों की बुद्धिरूपी कुमुदिनी सदा के लिए खिल जाती है । यह भारत इतिहास एक जाज्वल्यमान दीपक है । यह मोह का अन्धकार मिटाकर लोगों के अन्तःकरणरूप सम्पूर्ण अन्तरंग गृह को भलीभाँति ज्ञानालोक से प्रकाशित कर देता है।

सर्वेषां कविमुख्यानामुपजीव्यो भविष्यति ।

पर्जन्य इव भूतानामक्षयो भारतदुमः ॥[15]

अर्थात् - संसार में जितने भी श्रेष्ठ कवि होंगे उनके काव्य के लिये यह मूल आश्रय होगा। जैसे मेघ सम्पूर्ण प्राणियों के लिये जीवनदाता है, वैसे ही यह अक्षय भारत-वृक्ष है।

महाभारत की महनीयता का प्रतिपादन ग्रन्थ में यत्र-तत्र देखने को मिलता है । महाभारत के आदि में तो इसके विभिन्न पक्षों का उद्घाटन करते हुए इसकी महत्ता पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया है। इसी प्रकार -

यो गोशतं कनकशृङ्गमयं ददाति विप्राय वेदविदुषे च बहुश्रुताय ।

पुण्यां च भारतकथां शृणुयाच्च नित्यं तुल्यं फलं भवति तस्य च तस्य चैव ॥

आख्यानं तदिदमनुत्तमं महार्थं विज्ञेयं महदिह पर्वसंग्रहेण ।

श्रुत्वादौ भवति नृणां सुखावगाहं विस्तीर्णं लवणजलं यथा प्लवेन ॥[16]

अर्थात् - जो गौओं के सींग में सोना मढ़ाकर वेदवेत्ता एवं बहुज्ञ ब्राह्मण को प्रतिदिन सौ गौएँ दान देता है और जो केवल महाभारत-कथा का श्रवणमात्र करता है, इन दोनों में से प्रत्येक को बराबर ही फल मिलता है। यह महान् अर्थ से भरा हुआ परम उत्तम महाभारत आख्यान यहाँ पर्व संग्रहाध्याय के द्वारा समझना चाहिये। इस अध्याय को पहले सुन लेने पर मनुष्यों के लिये महाभारत-जैसे महासमुद्र में प्रवेश करना उसी प्रकार सुगम हो जाता है जैसे जहाज की सहायता से अनन्त जल-राशिवाले समुद्र में प्रवेश सहज हो जाता है।

महाभारत का माहात्म्य -

अनागतश्च मोक्षश्च कृष्णद्वैपायनः प्रभुः ।

संदर्भ भारतस्यास्य कृतवान् धर्मकाम्यया ॥

धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ ।

यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति च कुत्रचित् ॥[17]

अर्थात् - दीर्घदृष्टि तथा मोक्षरूप भगवान् श्रीकृष्णद्वैपायन व्यास ने केवल धर्म की कामना से ही इस महाभारत को रचा है। हे भरतर्षभ। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के सम्बन्ध में जो कुछ इस (महाभारत) में कहा गया है वहीं अन्य शास्त्रों में भी कहा गया है । जो इसमें नहीं कहा गया, वह कहीं नहीं कहा गया है।

शृणोति श्रावयेद् वापि सततं चैव यो नरः ।

सर्वपापविनिर्मुक्तो वैष्णवं पदमाप्नुयात् ॥

पितॄनुद्धरते सर्वानेकादशसमुद्भवान् ।

आत्मानं ससुतं चैव स्त्रियं च भरतर्षभ ।

यथा समुद्रो भगवान् यथा मेरुर्महान् गिरिः ।

उभौ ख्यातौ रत्ननिधी तथा भारतमुच्यते ॥

न तां स्वर्गगतिं प्राप्य तुष्टिं प्राप्नोति मानवः ।

यां श्रुत्वैव महापुण्यमितिहासमुपाश्नुते ॥[18]

अर्थात् - जो मनुष्य निरन्तर श्रीमहाभारत सुनता है, या सुनाता है वह सब पापों से मुक्त होकर विष्णु-पद को प्राप्त होता है। इतना ही नहीं, वह पुरुष अपनी ग्यारह पीढ़ी के समस्त पितरों का तथा पुत्र और पत्नी सहित अपना ही उद्धार करता है। जैसे समुद्र तथा महापर्वत सुमेरु दोनों रत्ननिधि के नाम से विख्यात हैं, वैसे ही यह महाभारत भी रत्नों का भंडार कहा गया है । मनुष्य को इस महान् पवित्र इतिहास के पढ़ने-सुनने से जैसी तुष्टि प्राप्त होती है वैसी स्वर्ग में जाने से भी नहीं प्राप्त होती। और भी -

अष्टादश पुराणानि धर्मशास्त्राणि सर्वशः ।

वेदाः साङ्गास्तथैकत्र भारतं चैकतः स्थितम् ॥

महत्त्वाद् भारवत्त्वाच्च महाभारतमुच्यते ।

निरुक्तमस्य यो वेद सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥[19]

अर्थात् - अठारह पुराण, समस्त धर्मशास्त्र, अङ्गोंसहित वेद-इन सबकी बराबरी अकेला महाभारत कर सकता है। क्योंकि यह ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण है और रहस्यरूपी असाधारण भार से युक्त है, इसी से इसे महाभारत कहा जाता है। जो पुरुष 'महाभारत' शब्द के इस अर्थ को जानता है, वह सब पापों से छूट जाता है।

जयो नामेतिहासोऽयं श्रोतव्यो मोक्षमिच्छता ।

ब्राह्मणेन च राज्ञा च गर्भिण्या चैव योषिता ॥

स्वर्गकामो लभेत् स्वर्ग जयकामो लभेजयम् ।

गर्भिणी लभते पुत्रं कन्यां वा बहुभागिनीम् ॥

यो गोशतं कनकशृङ्गमयं ददाति विप्राय वेदविदुषे सुबहु श्रुताय ।

पुण्यां च भारतकथां सततं शृणोति तुल्यं फलं भवति तस्य च तस्य चैव ॥

कार्ण वेदमिमं सर्वं शृणुयाद् यः समाहितः ।

ब्रह्महत्यादिपापानां कोटिस्तस्य विनश्यति ॥

पुत्राः शुश्रूषवः सन्ति प्रेष्याश्च प्रियकारिणः ।

भरतानां महज्जन्म महाभारतमुच्यते ॥[20]

अर्थात् - 'जय' नामक यह इतिहास मोक्ष की इच्छा रखने वाले, ब्राह्मण, राजा और गर्भवती स्त्रियों को तो अवश्य सुनना चाहिए। इसके सुनने से स्वर्ग की इच्छा करने वाले को स्वर्ग, जय की इच्छा वाले को जय और गर्भवती स्त्री को पुत्र या बड़े भाग्यवाली कन्या प्राप्त होती है । वेद को जानने वाले बहुश्रुत ब्राह्मण को कोई सुवर्ण से मँढ़े सींगोंवाली सौ गौदान दे, और दूसरा कोई निरन्तर महाभारत की कथा सुने तो इन दोनों को समान फल की प्राप्ति होती है । व्यासदेव रचित इस (पञ्चम) वेदरूप महाभारत का जो समाहितचित्त से आद्योपान्त श्रवण करता है, उसके ब्रह्महत्या आदि करोड़ों पाप नष्ट हो जाते हैं । फिर, इस इतिहास को सुनने वाले पुत्र माता-पिता के सेवकोन्मुख, तथा सेवक अपने स्वामी का प्रिय कार्य करने वाले बन जाते हैं । इसमें महान् भरतवंशियों की जीवन-कथा का वर्णन है, इससे भी इसको महाभारत कहते हैं ।

निष्कर्ष - महाभारत के सन्दर्भ में विभिन्न दृष्टियों से गवेषणा के समालोचनात्मक अध्ययन के उपरान्त अनेकविध रहस्यों का उद्घाटन होता है । निःसन्देह महाभारत विश्व वाङ्मय में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का श्रेष्ठतम महाकाव्य है । महाभारत में भगवान् श्रीकृष्ण, वेदव्यास, पितामह भीष्म आदि श्रेष्ठ पात्रों के माध्यम से धर्म के विभिन्न स्वरूपों का विवेचन करते हुए परमधर्म की अवधारणा को स्पष्ट किया गया है ।

REFERENCES

1. महाभारत, आदिपर्व प्रथम अध्याय, पृष्ठ संख्या 19
2. महाभारत, आदिपर्व 1/52-54
3. महाभारत, आदिपर्व 1/61-63
4. महाभारत, आदिपर्व 1/64-67
5. महाभारत, आदिपर्व 1/99-102
6. महाभारत, आदिपर्व 1/108-111
7. महाभारत, आदिपर्व 62/14-16
8. महाभारत, आदिपर्व 62/19-20
9. महाभारत, आदिपर्व 62/23-26
10. महाभारत, आदिपर्व- 62/31-32
11. महाभारत, आदिपर्व 62/45-50, 53
12. महाभारत, स्वर्गारोहण पर्व 5/45-52
13. महाभारत, स्वर्गारोहण पर्व 5/59
14. महाभारत, आदिपर्व 1/84-87
15. महाभारत, आदिपर्व 1/92
16. महाभारत, आदिपर्व 2/395-396
17. महाभारत, खण्ड-6, माहात्म्य, पृष्ठ संख्या 1226
18. महाभारत, खण्ड-6, माहात्म्य, पृष्ठ संख्या 1226-1227
19. महाभारत, खण्ड-6, माहात्म्य, पृष्ठ संख्या 1227
20. महाभारत, खण्ड-6, माहात्म्य, पृष्ठ संख्या 1227